



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 41] नई दिल्ली, शनिवार, अक्टूबर 13, 1973 (अश्विन 21, 1895)
No. 41] NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 13, 1973 (ASVINA-21, 1895)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

नोटिस (NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 28 फरवरी 1973 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned Gazettes of India Extraordinary were published up to the 28th February 1973 :—

अंक issue	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
--------------	--------------------------------	-----------------------------------	-----------------

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियन्त्रक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी।
मांग-पत्र नियन्त्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the Gazettes Extraordinary mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची		पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा अधिनियमों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	873	
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारों अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1629	
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	123	
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1173	
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—	
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें	—	
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर, भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं।)	1961	
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं।)	3513	
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधितर नियम और आदेश	317	
भाग III—खंड 1—महासेवा परीक्षक, गंध लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	4385	
भाग III—खंड 2—एकस्य कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	513	
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	—	
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1785	
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस	189	
पूरक संख्या 41—		
6 अक्टूबर, 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्टें	1297	
15 सितम्बर 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30 000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बर्त वीमारियों से हुई मृत्यु-सम्बन्धी आंकड़े	1143	

CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1.—Notification relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	873	PART II.—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	3513
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1629	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	317
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	123	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	4385
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	1173	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	513
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1785
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (Other than the Administrations of Union Territories)	1961	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	189
		SUPPLEMENT No. 41	
		Weekly Epidemiological Reports for week ending 6th October 1973	1297
		Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 15th September 1973	1143

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notification relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, दिनांक 1 अक्टूबर 1973

सं० 47-प्रेज/73—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं।

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री गोबर सिंह रावत,
उप निरीक्षक सं० 66766040,
76वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

4 जुलाई, 1972 को रात्रि को नादिया जिले के करीमपुर पुलिस थाने के अन्तर्गत बिलपार तारकगंज कालोनी में श्री राजेंद्र चन्द्र सरकार के घर में 14/15 हथियार बन्द डाकुओं के एक गिरोह ने सनसनीखेज ढाका डाला। श्री गोबर सिंह रावत ने, जो उस समय पास के कठालिया गांव में गश्त लगा रहे थे, बिलपार तारकगंज की ओर से राइफल चलाने की आवाज सुनी। वे तुरन्त दो अन्य सीमा सुरक्षा दल के कांस्टेबलों के साथ बिलपार तारकगंज की ओर गये। जब सीमा सुरक्षा दल की टुकड़ी मधुभंग बिल के समीप पहुंची तो उन्होंने 14/15 हथियार बन्द लोगों की एक टोली को देखा। सीमा सुरक्षा दल के लोगों ने डाकुओं को खुनौती दी जिस पर उन्होंने गोली चला दी। श्री गोबर सिंह तथा उनके गश्ती दल के सदस्यों ने मोजा संभाला और जवाबी गोली चलाई। यद्यपि सीमा सुरक्षा दल की गश्ती टुकड़ी की अपेक्षा डाकू अच्छे हथियारों से लैस थे फिर भी श्री गोबर सिंह निर्भीक बने रहे और समीप से डाकुओं के गिरोह पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े। भारी गोला-बारी में गिरोह का मुखिया प्रसाद मंडल मारा गया। इससे डाकुओं का गिरोह पूर्णरूप से भयभीत हो गया और रात्रि के अन्धकार में भाग गया।

डाकुओं से हुई मुठभेड़ में श्री गोबर सिंह रावत ने पहलशक्ति, वृद्ध निष्पक्ष और वीरता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 4 जुलाई 1972 से दिया जाएगा।

सं० 48-प्रेज/73—राष्ट्रपति कलकत्ता पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :-

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री रणजीत गुह नियोगी
पुलिस उप-निरीक्षक,
कलकत्ता
पश्चिम बंगाल

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

9 सितम्बर, 1971 को श्री रणजीत गुह नियोगी ने पूर्वी कलकत्ता के मुरारीपुकुर के उग्रवादियों के छिपने के स्थानों पर प्रातःकाल से पूर्व छापा मारने का प्रबन्ध किया। जब पुलिस दल ने बस्ती को घेरा तो उग्रवादियों ने पुलिस पर गोली चला दी। उग्रवादियों की गोली की परवाह न करते हुए श्री नियोगी रेंगते हुए बस्ती के समीप पहुंचे। तब उन्होंने गोली चलाई और उग्रवादियों में से दो को निशाना बनाया जिसमें से एक मारा गया। उन्होंने कुछ हथियार और गोलाबारूद भी पकड़ा।

श्री रणजीत गुह नियोगी ने 9 सितम्बर, 1971 को कलकत्ता में मुरारी-पुकुर में उग्रवादियों के छिपने के स्थान पर छापा मारने में अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उदाहरणीय उत्साह और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 8 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 9 सितम्बर 1971 से दिया जाएगा।

सं० 49-प्रेज/73—राष्ट्रपति मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :-

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री बाबू बेग,
कांस्टेबल संख्या 12
जिला शिवपुरी,
मध्य प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

मोहर सिंह के गिरोह के आत्मसमर्पण के बाद डाकू कृपा राम ने जो पहले उस गिरोह में था, अप्रैल, 1972 में अपना अलग गिरोह बना लिया और मध्य प्रदेश के शिवपुरी, दतिया तथा खालिबर जिलों और उत्तर प्रदेश के झांसी जिल में सक्रिय हो गया। श्री बाबू

बेग उस पुलिस दल के एक सदस्य थे जो 3 जुलाई, 1972 को भगोर व पलोथरी के जंगलों की खोज के लिए भेजा गया था क्योंकि उन जंगलों में डाकुओं के गिरोह के छुपने की खबर मिली थी। जब पुलिस दल पलोथर जंगल में जा रहा था तो डाकुओं द्वारा उन पर गोली चलाई गई। यद्यपि पुलिस दल पर अचानक हमला हुआ था फिर भी उन्होंने मोर्चा सम्भाला और जवानों में गोलीबाजी चलाई। डाकु क्योंकि बचाव की अच्छी स्थिति में थे, उन पर पुलिस की ओर से चलने वाली गोलीबारी का कोई प्रभाव नहीं हुआ। श्री बाबू बेग रेंग कर दूर तक बढ़ गये ताकि वह गिरोह पर नज़दीक से गोलीबारी कर सकें। जब वे और आगे नहीं बढ़ पाये तो मुद्द बांध करते हुए उन्होंने आगे छलांग लगाई और दो डाकुओं को गोली मार दी। डाकु गिरोह के शेष सदस्य घबरा गये और घने जंगल में भाग निकले। पुलिस ने कुछ हथियार व गोलाबारूद पकड़ लिया।

आधुनिक हथियारों से पूर्णतः लैस डाकुओं पर आक्रमण करने में श्री बाबू बेग ने उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 3 जुलाई, 1972 से दिया जाएगा।

सं० 50-प्रेष/73—राष्ट्रपति केन्द्रीय आरक्षित पुलिस दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री धनेश्वर झा,
कांस्टेबल सं० 67004026,
4थी बटालियन,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस दल।

जोषाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

मणिपुर और असम सीमा पर मणिपुर के जिरि नाम क्षेत्र में विरोधियों की गतिविधियों को नियंत्रित करने तथा उस क्षेत्र में सामान्य स्थिति पुनः स्थापित करने के लिए स्थानीय प्रशासन की सहायता के लिए केन्द्रीय आरक्षित पुलिस दल की 4थी बटालियन की "ए" कम्पनी को तैनात किया गया था। 29 दिसम्बर, 1971 को यह सूचना मिलने पर कि कुछ विरोधी छापामार युद्ध कौशल में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पचास सम्भवतः मणिपुर में प्रवेश करते वाले हैं, इस कम्पनी को आदेश दिया गया कि वह सीमा बन्द कर दें। 2 जनवरी, 1972 को "ए" कम्पनी का एक गश्ती दल इस क्षेत्र में घने जंगल के एक दल-दल वाले स्थान में स्थित एक झोंपड़ी के समीप पहुंचा। गश्ती दल को तीन भागों में विभाजित किया गया और उनसे कहा गया कि वे उस झोंपड़ी को तीन ओर से घेर लें जहां कि विरोधी छिपे हुए हैं, ताकि भागने के रास्ते बन्द हो जायें। श्री धनेश्वर झा उस दल के कमांडर थे जो झोंपड़ी की ओर सीधा बढ़ा। जब गश्ती दल झोंपड़ी से मुश्किल से 75 गज की दूरी पर था तो विरोधियों ने उन पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी कर दी। श्री झा निर्भीक रहे और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए तेजी से झोंपड़ी में घुस गये। उनके

दल के अन्य सदस्य भी उनके पीछे गये। श्री झा के इस यत्नात्मक तथा वीरतापूर्ण कार्यवाही से विरोधी भयभीत हो गये। केन्द्रीय आरक्षित पुलिस दल द्वारा उन्हें शीघ्र ही वहां से कर लिया गया। सात विरोधी तथा पड़ी संख्या में स्वचालित और अन्य हथियार तथा गोला बारूद पकड़ा गया।

श्री धनेश्वर झा ने विरोधियों के साथ हुई मुठभेड़ में सूक्ष्म बुद्धि तथा अद्वितीय उत्साह का परिचय दिया। उन्होंने अनेक विरोधियों को उनके हथियारों और गोलाबारूद सहित पकड़ा।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 1 जनवरी, 1972 से दिया जाएगा।

सं० 51-प्रेष/73—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री प्रीतम सिंह,
कांस्टेबल सं० 68466125,
60वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 10 मई 1972 से दिया जाएगा।

सं० 52-प्रेष/73—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री लक्ष्मण सिंह बिष्ट,
सहायक कमांडर,
60वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल,

2. यह पदक राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है।

सं० 53-प्रेष/73—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री सर्वजीत सिंह,
उप निरीक्षक,
60वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल,

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5

के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 10 मई 1972 से दिया जाएगा।

सं० 54-प्रेज/73—राष्ट्रपति मैसूर पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री मुमताज अहमद,
उप निरीक्षक,
ओल्ड हुबली पुलिस स्टेशन,
मैसूर।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

8 मार्च, 1969 को दो संप्रदायों के लोगों के बीच हुई झड़प के बाद भीड़ ने लूट-पाट एवं आगजनी शुरू कर दी। उसकी सूचना पाते ही श्री मुमताज अहमद तीन कांस्टेबलों के साथ तुरन्त दंगाग्रस्त स्थान की ओर खाना हुए और वहाँ जाकर देखा कि एक मकान जिसे बदमाशों ने आग लगा दी थी, दो व्यक्ति फंसे हुए हैं। श्री मुमताज अहमद ने भीड़ द्वारा किए जा रहे पथराव की परवाह न करते हुए हिसक भीड़ के बीचों-बीच से जाकर फंसे हुए व्यक्तियों का जीवन बचाया। फिर भीड़ ने उस क्षेत्र में अनेक मकानों को आग लगा दी। ऐसे ही एक मकान में तीन व्यक्ति फंसे हुए थे उन्हें भी श्री मुमताज अहमद ने बचाया। जब भीड़ को हिंसात्मक कार्य न करने के लिए बार-बार पुलिस द्वारा दी गई चेतावनी असफल रही तो श्री मुमताज अहमद ने अनियंत्रित भीड़ पर गोली चला दी। भीड़ ने मुकाबला किया और इस कार्यवाही के दौरान श्री मुमताज अहमद जखमी हुए और बेहोश हो गए।

श्री मुमताज अहमद ने निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए फंसे हुए व्यक्तियों का जीवन बचाने में सूझ-बूझ तथा साहस का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 8 मार्च 1969 से दिया जाएगा।

सं० 55-प्रेज/73—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री अशित कुमार बेरा,
कांस्टेबल सं० 6030,
आपराधिक सूचना अनुभाग,
गुप्तचर विभाग,
कलकत्ता।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

11 अगस्त 1970 को श्री अशित कुमार बेरा ने कुछ उग्रवादियों को पकड़ने के लिए सेंट्रल कलकत्ता में तालदोला में गार्डन

लेन में छापा मारने में भाग लिया। उग्रवादियों के छिपने के संदिग्ध अड्डे के समीप पुलिस दल के मोर्चा सम्भालने के बाद उग्रवादियों ने पुलिस दल पर बम व प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) फेंकने आरम्भ कर दिए। उग्रवादियों के आक्रमण की परवाह न करते हुए पुलिस दल उनके छिपने के अड्डे में घुस गया। श्री अशित कुमार बेरा और कुछ दूसरों को नीचे रहने को कहा गया जबकि पुलिस दल के कुछ अन्य सदस्य उग्रवादियों की तलाश में ऊपर की मंजिल पर गए। एक उग्रवादी ने, जो पुलिस दल के पहुंचने पर ग्राउंड फ्लोर के एक कमरे में छुप गया था, अचानक पीछे से श्री बेरा पर आक्रमण कर दिया। उसने श्री बेरा की पीठ में एक बड़ा सा पत्थर मारा जिसके परिणामस्वरूप श्री बेरा जखमी हो गए। अपने भाव की परवाह न करते हुए श्री बेरा ने अपना रिवाल्वर निकाला और उग्रवादी पर गोली चलाई। इस बीच उग्रवादी ने एक गुप्ती निकाली और श्री बेरा पर आक्रमण कर दिया। श्री बेरा ने उग्रवादी का हाथ पकड़ लिया और उसके साथ संघर्ष किया। इस बीच एक दूसरा कांस्टेबल तेजी से उनकी मदद के लिए वहाँ पहुंचा और दोनों ने उग्रवादी पर गोली चलाई, जो घटनास्थल पर ही मारा गया।

स्वयं बड़ा खतरा उठा कर श्री अशित कुमार बेरा ने हिंसक उग्रवादियों के छिपने के अड्डे पर छापा मारने में अनुकरणीय साहस तथा कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 11 अगस्त, 1970 से दिया जाएगा।

सं० 56-प्रेज/73—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री बिशन दास,
कांस्टेबल सं० 69599805,
61वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 1 मई 1972 से दिया जाएगा।

सं० 57-प्रेज/73—राष्ट्रपति मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री शंकर लाल,
कांस्टेबल संख्या 720
जिला—मन्दासौर
मध्य प्रदेश।

(स्वर्गीय)

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

बलात्कार, दंगा तथा संधमारी के चार मामलों में मन्दासौर

पुलिस को कुख्यात अपराधी राजबीर की तलाश थी। अपराधी 1968 से फरार था। 29/30 मई, 1972 की रात को कांस्टेबल शंकर लाल को बालागंज तथा कालाखेत क्षेत्र में गश्त के लिए तैनात किया गया था। गश्त लगाते समय श्री शंकर लाल ने कालाखेत में काफी रात गये फरार अपराधी को देखा। उन्होंने तुरन्त अपराधी को पकड़ लिया और उसे पुलिस थाने ले जाने का प्रयत्न किया। अपराधी ने उसका प्रतिरोध किया और बचकर भाग निकलने के लिये जी तोड़ प्रयत्न किया। श्री शंकर लाल ने सहायता के लिये शोर मचाया किन्तु कोई भी उनकी सहायता करने नहीं आया। यद्यपि वे निस्सहाय स्थिति में थे फिर भी उन्होंने अपराधी को नहीं छोड़ा और उसे पुलिस थाने की ओर खींच कर लाने का भरसक प्रयत्न किया। इसके बाद हुए संघर्ष के दौरान अपराधी ने चाकू निकाला और उसे श्री शंकर लाल के पेट में घोंप दिया। श्री शंकर लाल ने घायल होने पर भी कुछ दूर तक अपराधी का पीछा किया। रक्त बहते हुए घाव इतने गंभीर थे कि साहसी कांस्टेबल उन्हें सह नहीं सके और बाद में उनकी घावों के कारण मृत्यु हो गई।

श्री शंकर लाल ने कुख्यात अपराधी को पकड़ने के प्रयत्न में उच्च कर्तव्यनिष्ठा तथा साहस का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 30 मई 1972 से दिया जाएगा।

सं० 58-प्रेज/73—राष्ट्रपति मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री विनेश चन्द्र जुगरान,
पुलिस अधीक्षक,
दतिया,
मध्य प्रदेश।

श्री दीना नाथ राजोरिया,
पुलिस उप निरीक्षक,
पुलिस स्टेशन सियोन्धा,
जिला दतिया,
मध्य प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

डाकू विजय सिंह का गिरौह मध्य प्रदेश के ग्वालियर तथा दतिया जिलों और उत्तर प्रदेश के झांसी व जालौन जिलों में बहुत सक्रिय था। श्री विनेश चन्द्र जुगरान को अपने सियोन्धा शिविर में 17 अगस्त, 1972 को रात्रि के 2 बजे सूचना मिली कि गिरौह के तीन सशस्त्र सदस्य गांव अतरेता के समीप बीहड़ों में ठहरे हुए हैं। श्री जुगरान, श्री दीना नाथ राजोरिया सहित पुलिस दल के साथ तुरन्त बीहड़ों की ओर गये। पुलिस दल को तीन टुकड़ियों में बांट दिया गया, जिसमें से एक का नेतृत्व स्वयं श्री जुगरान ने किया। श्री दीना नाथ, श्री जुगरान के नेतृत्व वाली टुकड़ी के सदस्य थे। श्री जुगरान के नेतृत्व वाली टुकड़ी गिरौह के निकट पहुंची और उसे

आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। गिरौह द्वारा उन पर गोली चलाई गई और पुलिस दल व डाकुओं के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। चूंकि डाकुओं के भारी गोलीबारी की आड़ में बीहड़ों में बचकर भाग जाने की संभावना थी अतः श्री जुगरान ने अपनी निजी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए आगे बढ़ कर आक्रमण किया और वे डाकुओं पर झपट पड़े। यह देखकर कि श्री जुगरान डाकुओं के साथ भीषण लड़ाई में व्यस्त हैं और उन्हें कुछ मदद की आवश्यकता है, श्री दीनानाथ अपनी निजी सुरक्षा व डाकुओं की भारी गोलीबारी की बिल्कुल परवाह किये बिना रेंगते हुए आगे बढ़े और श्री जुगरान के पास पहुंच गये। अपनी कारगर गोलीबारी से श्री जुगरान व श्री दीनानाथ ने दो डाकुओं को मार डाला। तीसरा डाकू सर्कल इन्स्पेक्टर सहीपत सिंह के नेतृत्व वाली पुलिस टुकड़ी द्वारा मारा गया। इन डाकुओं में से दो को पकड़ने के लिए 500-500 रुपये का इनाम घोषित था।

श्री विनेश चन्द्र जुगरान और श्री दीनानाथ राजोरिया ने भारी गोलीबारी के सामने डाकुओं के गिरौह पर आक्रमण करते तथा घटना-स्थल पर दो डाकुओं को मारने में कर्तव्यनिष्ठा तथा उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप श्री दीनानाथ राजोरिया को नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 17 अगस्त, 1972 से दिया जाएगा।

सं० 59-प्रेज/73—राष्ट्रपति आन्ध्र प्रदेश स्पेशल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री बी० रामचन्द्रन,
इक्वलर मेजर,
“सी” कम्पनी,
2री आन्ध्र प्रदेश स्पेशल पुलिस,
कुरनूल,
आन्ध्र प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

श्री बी० रामचन्द्रन 2री आन्ध्र प्रदेश विशेष पुलिस की “सी” कम्पनी की प्लाटून सं० 1 से सम्बद्ध थे, जो पुट्टीकामागुडा में तैनात थी। 7 अक्टूबर, 1971 की शाम को पुलिस को सूचना मिली कि कुछ उग्रवादी श्री कोन्डा ओब्बंगी के समीप एक छप्पर में शरण लिए हुए हैं। श्री बी० रामचन्द्रन ने अपराधियों को पकड़ने के उद्देश्य से श्री कोन्डा ओब्बंगी की ओर प्रस्थान किया। जब पुलिस दल पहाड़ी पर आधे रास्ते चढ़ चुका था तो उस पर उग्रवादियों द्वारा गोलियां चलाई गईं। बिना विचलित हुए पुलिस दल ने मोर्चा संभाला। उग्रवादियों ने तीन विभिन्न दिशाओं से 303 रायफलों तथा बन्दूकों से गोलियां चलाई। पुलिस ने जवाब में गोलियां चलाई। उग्रवादियों की गोलियों की बिल्कुल परवाह न करते हुए पुलिस दल आगे बढ़ा। जब पुलिस की भारी गोलीबारी से उग्रवादी विचलित नहीं हुए तो श्री रामचन्द्रन अपनी जान को भारी खतरे में डाल

कर उस स्थान की ओर बढ़े जहाँ से उग्रवादी गोलियाँ चला रहे थे। इस पर उग्रवादी भाग गये और अपने पीछे एक लाश छोड़ गये।

इस मुठभेड़ में श्री जी० रामचन्द्रन ने उत्कृष्ट वीरता तथा साहस का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 7 अक्तूबर, 1971 से दिया जाएगा।

सं० 60-प्रेज/73—राष्ट्रपति मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों का नाम तथा पद

श्री राजा सिंह तोमर,
पुलिस उप निरीक्षक,
जिला ग्वालियर,
मध्य प्रदेश।

श्री नाथू सिंह,
हैड कांस्टेबल सं० 215,
18वीं बटालियन, स्पेशल सशस्त्र दल,
ग्वालियर,
मध्य प्रदेश।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

7 दिसम्बर, 1971 को श्री राजा सिंह तोमर को सूचना मिली कि डाकुओं द्वारा अपहृत राम सिंह काठी नामक व्यक्ति के संबंधी उसे मुक्त कराने के लिए डाकू हरचरण के गिरोह को तीस हजार रुपये की फिरोती अदा करने को राजी हो गए हैं। श्री राजा सिंह ने अपहृत व्यक्ति के संबंधियों को इस बात के लिए राजी कर लिया कि फिरोती अदा करने के लिए जाने वाले दल में स्वयं उन्हें भी शामिल कर लिया जाए। श्री राजा सिंह और हैड कांस्टेबल श्री नाथू सिंह ने दल के सदस्यों जैसे कपड़े पहने और ग्रामीणों के साथ डाकुओं के छिपने के स्थान पर गए। इन दोनों पुलिस अधिकारियों ने क्रमशः एक रिवाल्वर तथा एक टी० एम० सी० अपने कपड़ों में छुपा ली। जब वह दल उस स्थान पर पहुंचा जहां डाकू पड़ाव डाले हुए थे, तो एक डाकू ने ग्रामीणों के दल के सदस्यों की तलाशी लेनी शुरू की। जब डाकू गिरोह का संतरी तलाशी के लिए श्री राजा सिंह के पास पहुंचा तो श्री राजा सिंह ने अपना रिवाल्वर निकाला और डाकुओं पर गोली चला दी। किन्तु निशाना चूक गया। श्री नाथू सिंह ने भी टी० एम० सी० से गोली चलाने का प्रयत्न किया किन्तु हथियार में कुछ यांत्रिक त्रुटि के कारण वह सफल नहीं हुए। बिना हिम्मत हारे इस पुलिस अधिकारियों ने पुनः अपने हथियारों में गोली भरी और डाकुओं पर गोली चलाई। उन्होंने एक डाकू को मार दिया, एक राइफल पर कब्जा किया और अपहृत व्यक्ति को बचा लिया।

श्री राजा सिंह तोमर तथा श्री नाथू सिंह ने 6 डाकुओं के गिरोह पर उनके अड्डे पर ही उन पर आक्रमण करने में कर्तव्यनिष्ठा तथा उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5

के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 7 दिसम्बर, 1971 से दिया जाएगा।

सं० 61-प्रेज/73—राष्ट्रपति तमिलनाडु पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री कृष्ण गौडर गोपालकृष्णन्,
पुलिस उप निरीक्षक,
जिला सेलम,
तमिल नाडु।

श्री मरीमुठू रंगानाथन्,
हैड कांस्टेबल सं० 2094,
जिला सेलम,
तमिलनाडु।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

जब श्री कृष्ण गौडर गोपालकृष्णन् जिला सेलम में मैकडोनाल्ड कोल्टरी पुलिस थाने के प्रभारी अधिकारी थे तो उन्हें 2 जुलाई, 1972 को सूचना मिली कि दो पेशेवर अपराधियों ने, जिनकी एक आपराधिक मामले में तलाश थी, चिन्नमल नामक एक व्यक्ति की झोपड़ी में शरण ले रखी है। यह सूचना मिलने पर श्री गोपालकृष्णन् तुरन्त श्री मरीमुठू रंगानाथन् और तीन अन्य व्यक्तियों को साथ लेकर अपराधियों के छुपने के स्थान की ओर बढ़े। लगभग रात्रि के 9 बजे पुलिस दल झोपड़ी के पास पहुंचा। पुलिस दल को देखकर दो अपराधी अपने हाथों में छुरा लिए हुए झोपड़ी के बाहर आए। अपराधियों में से एक ने चाकू से श्री रंगानाथन् पर आक्रमण किया और उनके दाहिने हाथ पर गहरा घाव कर दिया। अपराधी ने फिर श्री गोपालकृष्णन् पर आक्रमण किया किन्तु उन्होंने बार को बचा लिया। फिर दूसरे अपराधी ने श्री गोपालकृष्णन् पर आक्रमण किया। उन्होंने अपनी रिवाल्वर निकाल कर अपराधियों को हथियार डालने की चेतावनी दी। किन्तु अपराधी आगे बढ़ते रहे और उन्होंने दोनों श्री गोपालकृष्णन् और श्री रंगानाथन् तथा दल के अन्य सदस्यों को मार डालने की धमकी दी। श्री गोपालकृष्णन् ने तब अपनी रिवाल्वर से एक गोली चलाई, जिसके परिणामस्वरूप एक अपराधी जमीन पर गिर पड़ा। दूसरे अपराधी ने अपना छुरा नीचे फेंक दिया और पुलिस को आत्मसमर्पण कर दिया। यद्यपि श्री रंगानाथन् जखमी थे और उनकी उंगली से निरंतर रक्त बह रहा था, फिर भी उन्होंने खूंखार अपराधी को नियंत्रण में लाने के लिए श्री गोपालकृष्णन् की सहायता की। घायल अपराधी बाद में घावों के कारण मर गया।

दो खूंखार अपराधियों को पकड़ने में श्री गौडर गोपालकृष्णन् और श्री मरीमुठू रंगानाथन् ने उत्कृष्ट साहस तथा कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5

अन्तर्गत विशेष म्नीकृत भला भी दिनांक 2 जुलाई, 1972 से दिया जाएगा।

अशोक मिन, राष्ट्रपति के सचिव

प्रधान मंत्री सचिवालय

नई दिल्ली-110011, दिनांक 22 सितम्बर 1973

नोटिस

सं० एफ० 21/1411/71-पी० एम० ए०—केन्द्रीय सिविल सेवा (अस्थायी सेवा) नियम 1965 के नियम 5 के उप-नियम (1) के अनुपालन में, मैं इसके द्वारा श्री सुल्तान सिंह, चपरासी को नोटिस देता हूँ कि सरकारी गजट में इस नोटिस के प्रकाशित होने की तारीख से एक महीना की अवधि समाप्त होने पर उनकी सेवा समाप्त समझी जाएगी।

सर्व प्रकाश खन्ना, निजी सचिव

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय

(परिवार नियोजन विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 20 सितम्बर, 1973

शुद्धिपत्र

सं० 5-9/71-ए० पी०—आंध्र प्रदेश में बाल परिचर्या परियोजना से संबंधित नीति और तकनीकी मामलों में सलाह देने के लिए भारतीय सलाहकार बोर्ड के गठन संबंधी इस मंत्रालय की अधिसूचना संख्या 5-9/71-ए० पी० दिनांक 29-1-1973 इस प्रकार पढ़ी जाए।

निम्नलिखित के स्थान पर	इस प्रकार पढ़ा जाय
डा० राधा रमण अध्यक्ष,	अध्यक्ष,
भारतीय शिशु कल्याण परिषद्,	भारतीय शिशु कल्याण परिषद्,
हैदराबाद।	नई दिल्ली।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि शुद्धिपत्र की एक प्रतिलिपि आंध्र प्रदेश सरकार को भेज दी जाय तथा सूचना के लिये शुद्धिपत्र भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाय।

आनन्द प्रकाश अली, उप सचिव

कृषि मंत्रालय

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 22 सितम्बर 1973

संकल्प

सं० 24-1/73 फसल प्रशासन-1—भारत सरकार ने अपने संकल्प संख्या 2-65/66-सी० सी०-1 दिनांक 15 दिसम्बर, 1969 द्वारा गठित भारतीय नारियल विकास परिषद् को तत्काल पुनर्गठित करने का निर्णय किया है। इस पुनर्गठित परिषद् के सदस्य निम्नलिखित होंगे:—

1. अध्यक्ष भारत सरकार द्वारा एक गैर-सरकारी व्यक्ति नामजद किया जायेगा।

2. उपाध्यक्ष

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के अपर सचिव

3. सदस्य

केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के प्रतिनिधि।

(क) राज्य

निम्नलिखित राज्य सरकारों के कृषि विभाग से एक-एक प्रतिनिधि संबंधित राज्य सरकार द्वारा नामित किए जाएंगे:—

1. केरल
2. तमिलनाडु
3. मैसूर
4. आंध्र प्रदेश
5. उड़ीसा
6. गोवा
7. महाराष्ट्र

(ख) केन्द्रीय सरकार

1. योजना आयोग का एक प्रतिनिधि
2. वाणिज्य मंत्रालय का एक प्रतिनिधि
3. भारत सरकार का कृषि आयुक्त
4. परियोजना समन्वयक (नारियल तथा सुपारी) और निदेशक, केन्द्रीय बागान अनुसंधान संस्थान, डाकखाना कुडलू कासरगाड़, केरल।
5. विस्तार निदेशालय के प्रतिनिधि के रूप में संयुक्त आयुक्त (विस्तार प्रशिक्षण) अथवा उसके बदले में निदेशक, क्षेत्र सूचना यूनिट।

(ग) उत्पादकों के प्रतिनिधि प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों से संबंधित राज्य सरकारों द्वारा उत्पादकों के दस प्रतिनिधि निम्नलिखित रूप से नामित किए जाएंगे:—

- | | |
|-----------------|---------------|
| 1. केरल | तीन प्रतिनिधि |
| 2. तमिलनाडु | दो प्रतिनिधि |
| 3. मैसूर | एक प्रतिनिधि |
| 4. आंध्र प्रदेश | एक प्रतिनिधि |
| 5. महाराष्ट्र | एक प्रतिनिधि |
| 6. पश्चिम बंगाल | एक प्रतिनिधि |
| 7. उड़ीसा | एक प्रतिनिधि |

उत्पादकों का एक प्रतिनिधि भारत सरकार द्वारा नामित किया जायेगा।
(घ) व्यापारियों के प्रतिनिधि विभिन्न मान्यताप्राप्त बैंक्स आफ कामर्स तथा अन्य व्यापारिक निकायों

द्वारा सिफारिश किए गए प्रत्याशियों में से परिषद् में व्यापारियों के तीन प्रतिनिधि नामित किए जाएंगे।

(३) उद्योग के प्रतिनिधि उद्योग के तीन प्रतिनिधि
(च) अन्य संसद कार्य विभाग द्वारा तीन संसद सदस्य नामित किए जाएंगे।

(छ) परिषद् में उन हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पहले से नामित न किए गए ऐसे अतिरिक्त व्यक्ति जो समय-समय पर भारत सरकार द्वारा नामित किए जायेंगे।

4. सदस्य सचिव निदेशक,
नारियल विकास निदेशालय,
कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग)
एर्नाकुलम।

5. पर्यवेक्षक (जो परिषद् का सदस्य नहीं होगा किन्तु परिषद् की बहस में इसे सहायता देने के लिये अवश्य आमंत्रित किया जायेगा)

1. अध्यक्ष, राज्य व्यापार निगम अथवा उसका प्रतिनिधि
2. कृषि विपणन सलाहकार, कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग)
3. कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) से सम्बद्ध संयुक्त सचिव (वित्त)
4. अर्थ तथा सांख्यिकीय सलाहकार कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग)
5. निदेशक, केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मैसूर।
6. सचिव, राष्ट्रीय सहकारिता विकास निगम।
7. निदेशक (बागवानी) कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग)
8. संयुक्त आयुक्त (निर्यात संवर्धन) कृषि मंत्रालय, कृषि विभाग।

9. संयुक्त आयुक्त (सी० सी०) कृषि विभाग

10. उप सचिव (फसल), कृषि विभाग।

कार्य

2. यह परिषद् एक सलाहकार निकाय के रूप में होगी और इसके कार्य निम्नलिखित होंगे :—

- (1) केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा तैयार किए गए विकास कार्यक्रम पर विचार करना, समय-समय पर उनकी प्रगति का पुनरीक्षण करना तथा उस प्रगति में तेजी लाने के लिए उपाय सुझाना।
- (2) विपणन, परिसंस्करण, भंडारण और जिन्सों के परिवहन की समस्याओं तथा उनके व्यापार व मूल्य निर्धारण की जांच करने में सक्रिय कार्य करना तथा उन पर सरकार को सलाह देना।
- (3) कार्यक्रमों को तैयार करके तथा बाजार में अच्छी किस्म की जिन्स की आवश्यकता के बारे में अनुसंधान

एजेंसियों को सलाह देकर अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों में उपयुक्त समन्वय स्थापित करना।

(4) निर्यात बाजार की आवश्यकताओं पर विचार-विमर्श करना और विकास कार्यक्रमों को उसके अनुसार उपयुक्त रूप से समायोजित करना तथा

(5) समय-समय पर सौंपे गए ऐसे अन्य कार्य करना जो जिन्स विकास की सहायताएँ बनाए गए हों।

3. भारतीय नारियल विकास परिषद् को विशेष महत्व के मामलों की देखभाल करने के लिए आवश्यकतानुसार स्थायी समिति, तकनीकी समिति और तदर्थ समिति गठित करने और आवश्यकतानुसार सदस्यों का (जैसे कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य विशेष हितों के प्रतिनिधि) सहयोजित करने का अधिकार प्राप्त होगा।

4. नारियल उगाए जाने वाले क्षेत्रों में व्यापार और उद्योग के प्रमुख केन्द्रों में इस परिषद् की समय-समय पर बैठक हुआ करेगी और यह भारत सरकार को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगी।

5. परिषद् के सदस्यों का कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। संसद का सदस्य न रहने पर अथवा तीन वर्ष के पश्चात् (इनमें से जो भी पहले हो) संसद सदस्य इस परिषद् के सदस्य नहीं रह जायेंगे। आवश्यकतानुसार भारत सरकार इस अवधि को बढ़ा या घटा सकती है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रति समस्त राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनों तथा भारत सरकार के मंत्रालयों, योजना आयोग, मंत्रिमंडल सचिवालय, प्रधान मंत्री सचिवालय, लोक सभा और राज्य सभा सचिवालय को भेज दी जाये।

2. यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये।

बी० सी० कपूर, अपर सचिव

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय

समाज कल्याण विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 21 सितम्बर 1973

संकल्प

सं० 20-14/67 डब्ल्यू० डब्ल्यू०—भारत सरकार ने भारत में स्त्रियों की हैसियत से सम्बद्ध एक समिति गठित की थी, देखिए संकल्प संख्या 20-14/67-एस० डब्ल्यू-2 दिनांक 22 सितम्बर, 1971।

2. समिति ने अपनी रिपोर्ट 2 वर्षों की अवधि के भीतर पेश करनी थी। समिति ने अभिवेदन किया है कि इसे सौंपे गए काम की पेचीदगी और व्यापकता के कारण वह उसे दो वर्षों में पूरा नहीं कर सकेगी।

3. इस मामले के सभी पहलुओं पर ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद सरकार ने स्त्रियों की हैसियत से सम्बद्ध समिति के कार्यकाल का 22 सितम्बर, 1973 से 31 मार्च 1974 तक बढ़ाने का निर्णय

किया है ताकि उपर्युक्त संकल्प में दी गई शर्तों के अनुसार वह अपनी रिपोर्ट पूरी कर सके।

4. 22 सितम्बर, 1973 से इस समिति की रचना इस प्रकार होगी :—

1. श्रीमती फूलरेणू गुह	अध्यक्षा
2. श्रीमती नीरा डोगरा	सदस्या
3. श्रीमती लीला दुबे	सदस्या
4. श्रीमती उर्मिला हकसर	सदस्या
5. श्रीमती सकीना ए० हसन	सदस्या
6. श्रीमती मनीबेन कारा	सदस्या
7. श्री विक्रम चन्द महाजन, संसद सदस्य	सदस्य
8. श्रीमती के० लक्ष्मी रघुरमैया	सदस्या
9. श्रीमती लोतिका सरकार	सदस्या
10. श्रीमती सावित्री श्याम, संसद सदस्या	सदस्या
11. डा० (श्रीमती) वीणा मजुमदार	सदस्या-सचिव

आवेश

आदेश दिया जाता है कि उक्त संकल्प को साधारण जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

प्र० प० त्रिवेदी, संयुक्त सचिव

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक सितम्बर 1973

सं० 72/आर० ई०/161/23—रेलवे लाइनों और परिसरों के सभी उपयोगकर्ताओं की सामान्य सूचना के लिए एतद्द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि बड़ीदा और बम्बई मंडलों के मकरपुरा (386/428 कि० मी०) से भेस्तान (257/49 कि० मी०) खण्ड पर 27-9-1973 को अथवा उसके बाद 25 के० बी० वाले ए० सी० ऊपरी कर्षण तारों में बिजली चालू कर दी जायेगी और उसी तारीख से ऊपरी कर्षण लाइन हर समय के लिए बिजली-युक्त मानी जायेगी। कोई भी अनधिकृत व्यक्ति उक्त ऊपरी कर्षण लाइन के पास नहीं जायेगा और न ही उसके आस-पास काम करेगा।

सं० 72/आर० ई०/161/23—जन साधारण के सूचनार्थ अधिसूचित किया जाता है कि पश्चिम रेलवे के मकरपुरा (386/428 कि० मी०) भेस्तान (257/49 कि० मी०) खण्ड पर 25 के० बी० ए० सी० विद्युत् कर्षण चालू करने के सम्बन्ध में अत्यधिक ऊंचाई तक लदे माल डिब्बों की बिजलीयुक्त कर्षण तारों को छूने या खतरनाक रूप से उनके निकट जाने से रोकने के उद्देश्य से सभी समपारों पर सड़क की सतह से 4.673 मीटर

(15'-4") की स्पष्ट ऊंचाई पर ऊंचाई मापक लगा दिये गये हैं। जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि वे वाहनों का लदान करते समय ऊपर बतायी गई ऊंचाई को ध्यान में रखें और यह सुनिश्चित करें कि सड़क वाहनों द्वारा ले जाये जाने वाले भार से किसी भी हालत में ऊंचाई मापकों का अतिक्रमण न हो।

अत्यधिक ऊंचाई तक भार लौटने में निम्नलिखित खतरे हैं :—

1. ऊंचाई मापक को खतरा और इसके परिणाम-स्वरूप सड़क तथा रेलवे लाइन पर बाधा।
2. ढोये जाने वाले सामान या उपस्कर अथवा स्वयं वाहन को खतरा।
3. बिजलीयुक्त कण्टकटारों से छू जाने या खतरनाक रूप से उनके निकट आ जाने के कारण आग लगने का खतरा और जीवन की जोखिम।

दिनांक 12 सितम्बर 1973

संकल्प

सं० ई० आर० बी० 1/73/21/81—11-12-1972 को राज्य सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उप रेलमंत्री ने जो आश्वासन दिया था उस की आपूर्ति के लिए भारत सरकार ने एक समिति का गठन किया है जिसे "दक्षिण मध्य रेलवे में शोलापुर मंडल संचालन समिति" कहा जाता है।

इस समिति में निम्नलिखित होंगे :—

- | | |
|---|---------|
| 1. श्री मोहम्मद शफी कुरैशी उप रेल मंत्री | अध्यक्ष |
| 2. श्री एस० आर० दमनी, संसद् सदस्य,
लोक सभा | सदस्य |
| 3. श्री बाबू राव जे० काले,
संसद सदस्य, लोक सभा | सदस्य |
| 4. श्री एन० जी० गोरे,
संसद् सदस्य, राज्य सभा | सदस्य |

रेलवे बोर्ड में कुशलता न्यूरो के निदेशक समिति के सचिव के रूप में कार्य करेंगे। समिति के विचारार्थ विषय इस प्रकार हैं—

- (i) शोलापुर मंडल में व्यापार के बारे में वास्तव में सामने आने वाली रेल परिवहन सम्बन्धी को जानना, उनकी जांच करना और दक्षिण मध्य रेलवे द्वारा उनके समाधान के लिए व्यावहारिक उपायों की सिफारिश करना; और
- (ii) शोलापुर मंडल के कर्मचारियों द्वारा अनुभव की गई विशेष या असाधारण कठिनाइयों के समाधान के लिए प्रशासनिक रूप से व्यावहारिक और सामान्यतः सन्तोषजनक उपायों का पता लगाना और दक्षिण मध्य रेलवे को सूचित करना।

समिति अपनी रिपोर्ट सरकार को यथाशीघ्र प्रस्तुत करने का प्रयास करेगी।

एच० एफ० पिटी, सचिव (रेलवे बोर्ड)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 1st October 1973

No. 47-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Gobar Singh Rawat,
Sub-Inspector No. 66766040
76th Battalion,
Border Security Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the night of 4th July, 1972 a daring dacoity was committed in the house of one Shri Rajender Chandra Sircar of Bilpar Tarakganj Colony, Police Station Karimpur in Nadia District by a gang of 14/15 armed dacoits. Shri Gobar Singh Rawat who was patrolling in the area of neighbouring Kathalia village at that time heard the sound of rifle shots from towards Bilpar Tarakganj. He immediately proceeded, with two other Border Security Force Constables towards Bilpar Tarakganj. When the Border Security Force party reached near Madhubhang Bil, they saw an armed group of 14/15 men. The Border Security Force party challenged the dacoits, who opened fire. Shri Gobar Singh and the members of his patrol party, took up position and returned the fire. Even though the dacoits were better equipped than the Border Security Force patrol party, Shri Gobar Singh remained undeterred and moved forward to attack the gang of dacoits from a closer range. In the heavy exchange of fire, the gang leader Prasad Mandal was shot dead. This completely unnerved the dacoit gang who ran away under the cover of darkness.

In the encounter with the dacoits, Shri Gobar Singh Rawat displayed initiative, determination and gallantry.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 4th July 1972.

No. 48-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Calcutta Police :—

Name and rank of the officer

Shri Ranajit Guha Niyogi,
Sub-Inspector of Police,
Calcutta,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On 9th September, 1971, Shri Ranajit Guha Niyogi arranged a predawn raid on the hide-out of extremists of Muraripukur in Eastern Calcutta. As the police party surrounded the *bastee*, the extremists opened fire on the Police. In disregard of the firing by the extremists Shri Niyogi crawled and reached near the *bastee*. He then opened fire and hit two of the extremists and killed one of them. He also captured some arms and ammunition.

Shri Ranajit Guha Niyogi displayed exemplary courage and devotion to duty at a great personal risk in the raid on the hide-out of extremists at Muraripukur in Calcutta on 9th September, 1971.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 9th September, 1971.

No. 49-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Madhya Pradesh Police :—

Name and rank of the officer

Shri Babu Beg,
Constable No. 12,
District Shivpuri,
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

After the surrender of Mohar Singh's gang, dacoit Kripa Ram who was formerly a member of that gang, formed a gang of his own in April, 1972 and became active in the Shivpuri, Datia and Gwalior Districts of Madhya Pradesh and Jhansi District of Uttar Pradesh. Shri Babu Beg was a member of the Police party which was sent on 3rd July, 1972, to search the jungles of Bhagor and Palothar as there were reports of the dacoit gang hiding in those jungles. As the Police Party was moving in Palothar jungle, they were fired upon by the dacoits. The Police party was taken unaware but they took up position and returned the fire. As the dacoits were well entrenched in defensive position, the fire from the Police party was not effective. Shri Babu Beg crawled forward to an appreciable distance so that he could open effective fire on the gang from close range. When he could not advance further, he leapt forward uttering a war cry and shot two dacoits. The remaining members of the dacoit gang became unnerved and made their escape into the dense jungle. Some arms and ammunition were captured by the Police.

Shri Babu Beg exhibited conspicuous gallantry in charging at the dacoits who were fully armed with modern weapons.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from the 3rd July, 1972.

No. 50-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Central Reserve Police Force :—

Name and rank of the officer

Shri Dhaneshwar Jha,
Constable No. 67004026,
4th Battalion,
Central Reserve Police Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

'A' Company of the 4th Battalion of Central Reserve Police Force was deployed in Jiribam Sector of Manipur on the border of Manipur and Assam in order to assist the local administration in curbing the activities of the hostiles and for restoration of normalcy in the area. On the 29th December, 1971, the Company was ordered to seal the borders in view of information that some hostiles were likely to enter Manipur after receiving training in guerilla war-fare. On the 2nd January, 1972 a patrol party of the 'A' Company approached a hut situated in a marshy area in the thick jungle in this sector. The patrol party was divided into three groups who were asked to surround the hut from three sides where the hostiles were understood to be hiding and to cut off their escape routes. Shri Dhaneshwar Jha was the Commander of the Party which proceeded to the hut straight. When the patrol party was hardly 75 yards from the hut, the hostiles opened heavy fire on them with their automatic weapons. Shri Jha remained undeterred and in disregard of his own personal safety stormed into the hut. The other members of his party also followed him. The sudden and brave action on the part of Shri Jha unnerved the hostiles. They were soon over-powered by the Central Reserve Police Force party. Seven hostiles and a large number of automatic weapons and other arms and ammunition were captured.

Shri Dhaneshwar Jha exhibited coolness of mind and high degree of courage in the encounter with the hostiles. He captured several hostiles with their arms and ammunition.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and conse-

quently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 1st January 1972.

No. 51-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Pritam Singh,
Constable No. 68466125,
60th Battalion,
Border Security Force. (Deceased)

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 10th May, 1972.

No. 52-Pres./73.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Laxman Singh Bisht,
Assistant Commandant,
60th Battalion,
Border Security Force.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal.

No. 53-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Sarbjit Singh,
Sub-Inspector,
60th Battalion,
Border Security Force.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 10th May 1972.

No. 54-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Mysore Police :—

Name and rank of the officer

Shri Mumtaz Ahmed,
Sub-Inspector,
Old Hubli Police Station,
Mysore.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On hearing that the mobs were indulging in acts of arson and looting after a clash between the members of two communities on the 8th of March, 1969, Shri Mumtaz Ahmed rushed to the trouble spot with three Police Constables and found two persons entrapped in a house which had been set on fire by the miscreants. Shri Mumtaz Ahmed pushed his way through the violent mob in disregard of the pelting of stones by the mob and saved the lives of the entrapped persons. The mob then set fire to several other residential houses in the locality. In one such house three persons were entrapped who were also rescued by Shri Mumtaz Ahmed. When repeated warnings by the police force to the crowd for desisting from the violent acts failed, Shri Mumtaz Ahmed opened fire on the unruly mob. The mob retaliated and in the course of this action Shri Mumtaz Ahmed received several injuries and also became unconscious.

Shri Mumtaz Ahmed exhibited presence of mind and courage in saving the lives of entrapped persons in disregard of his own personal safety.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 8th March, 1969.

No. 55-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name and rank of the officer

Shri Ashit Kumar Bera,
Constable No. 6030,
Criminal Intelligence Section,
Detective Department,
Calcutta.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 11th August, 1970, Shri Ashit Kumar Bera participated in a raid at Gardener's Lane at Taltolla in Central Calcutta to apprehend certain extremists. After the Police party had taken up position near the suspected hide-out of the extremists, the extremists started hurling bombs and missiles on the Police party. In disregard of the attack of the extremists the Police party entered the hide-out. Shri Ashit Kumar Bera and a few others were asked to remain down-stairs while some other members of the Police party went upstairs in search of the extremists. One extremist who had on the arrival of the Police hid himself in a room on the ground floor, suddenly attacked Shri Bera from behind. He hit Shri Bera on the back with a big boulder as a result of which Shri Bera was injured. In disregard of his injury Shri Bera took out his revolver and fired at the extremist. In the meantime the extremist whipped out a sword-stick and attacked Shri Bera. Shri Bera caught hold of the hand of the extremist and fought with him. In the meantime another Constable rushed to his help and both of them fired at the extremist, who was killed on the spot.

Shri Ashit Kumar Bera displayed exemplary courage and devotion to duty at a great personal risk in connection with a raid on the hide-out of violent extremists.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 11th August, 1970.

No. 56-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Bishen Dass,
Constable No. 69599805
61st Battalion,
Border Security Force.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 1st May, 1972.

No. 57-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Madhya Pradesh Police :—

Name and rank of the officer

Shri Shankarlal (Deceased)
Constable No. 720
District Mandsaur
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

Rajbir a notorious criminal was wanted by the Mandsaur Police in four cases of rape, rioting and house-breakings. The

criminal had been absconding since 1968. On the night of 29/30 May, 1972 Shri Shankarlal, Constable, was detailed for patrol duty in Balaganj and Kalakhet areas. While patrolling Shri Shankarlal saw the absconding criminal in Kalakhet in the late hours of the night. He immediately caught hold of the criminal and tried to bring him to the Police Station. The criminal resisted and struggled hard to escape. Shri Shankarlal shouted for help but he could not get any help. Even though he was in a helpless condition he did not loose hold of the criminal and treid his best to drag him to the Police Station. In the ensuing struggle the accused took out a knife and stabbed Shri Shankarlal in the abdomen. Even though Shri Shankarlal was injured he chased the criminal for some distance. The bleeding injuries were too severe for the gallant constable to sustain and later on he succumbed to them.

Shri Shankarlal exhibited a high sense of devotion to duty and gallantry in attempting to apprehend a notorious criminal.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 30th May, 1972.

No. 58-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Madhya Pradesh Police :—

Names and ranks of the officers

Shri Dinesh Chandra Jugran,
Superintendent of Police,
Datia,
Madhya Pradesh.

Shri Deena Nath Rajoria,
Sub-Inspector of Police,
Police Station Seondha,
District Datia,
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

The gang of the dacoit Vijay Singh was very active in the Gwalior and Datia districts of Madhya Pradesh as also in the Jhansi and Jalaun Districts of Uttar Pradesh. While camping at Seondha, Shri Dinesh Chandra Jugran received information at 2 A.M. on 17th August, 1972, that three armed members of the gang were staying in the ravines near Village Atreta. Shri Jugran immediately proceeded towards the ravines with the Police Force including Shri Deena Nath Rajoria. The Police Force was divided into three parties, one of which was led by Shri Jugran himself. Shri Deena Nath was a member of the Party led by Shri Jugran. The party led by Shri Jugran got near the gang and challenged them to surrender. They were fired upon by the gang and a fierce encounter ensued between the Police party and the dacoits. As there was likelihood of the dacoits escaping into the ravines under the cover of heavy fire, Shri Jugran, in utter disregard of his personal safety led an assault and charged at the dacoits. Seeing that Shri Jugran was engaged in fierce battle with the dacoits and needed some help, Shri Deena Nath crawled and reached near Shri Jugran without caring for his personal safety and in utter disregard of the heavy fire from the dacoits. With their effective fire Shri Jugran and Shri Deena Nath killed two of the dacoits. The third dacoit was killed by the Police party led by Shri Mahipat Singh, Circle Inspector. Two of these dacoits carried a reward of Rs. 500.00 each for their apprehension.

Shri Dinesh Chandra Jugran and Shri Deena Nath Rajoria displayed devotion to duty and gallantry of a high order in charging at the gang of dacoits in the face of heavy fire and in killing two of the dacoits on the spot.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently in the case of Shri Deena Nath Rajoria the award carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 17th August, 1972.

No. 59-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Andhra Pradesh Special Police :—

Name and rank of the officer

Shri V. Ramachandran,
Havildar Major,
'C' Company,
2nd Andhra Pradesh Special Police,
Kurnool,
Andhra Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

Shri V. Ramachandran was attached to No. 1 Platoon of 'C' Company of the 2nd Andhra Pradesh Special Police which was stationed at Puttikamaguda. On the evening of 7th October, 1971, information was received by the police that some extremists were taking shelter in a thatched shed near Sirikonda Obhangi. Shri V. Ramachandran proceeded towards Sirikonda Obhangi in order to apprehend the criminals. When the Police party had climbed half way up the hill they were fired upon by the extremists. Undeterred, the police party took up the positions. The extremists fired from three different directions with 303 rifles and guns. The fire was returned by the police. The Police party advanced further in utter disregard of the fire from the extremists. When the intense fire from the police party failed to deter the extremists, Shri Ramachandran at a great personal risk advanced towards the place from where the extremists were firing. The extremists then ran away leaving behind a dead body.

In this encounter Shri V. Ramachandran exhibited conspicuous gallantry and bravery.

2. This award is made for gallantry under rule (i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 7th October, 1971.

No. 60-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Madhya Pradesh Police :—

Names and ranks of the officers

Shri Raja Singh Tomar,
Sub-Inspector of Police,
District Gwalior,
Madhya Pradesh.
Shri Nathu Singh,
Head Constable No. 215,
18th Battalion, Special Armed Force,
Gwalior,
Madhya Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 7th December, 1971, Shri Raja Singh Tomar received information that the relations of one Ram Singh Kachhi, who had been kidnapped by the dacoits, had agreed to pay a ransom of Rs. 30,000.00 to the gang of dacoit Har Charan in order to secure the release of the kidnapped person. Shri Raja Singh prevailed upon the relations of the kidnapped person to include him in the party going to pay the ransom. Shri Raja Singh and Shri Nathu Singh, Head Constable, attired themselves as the members of the party and accompanied the villagers to the hide-out of the dacoits. Both these police officials concealed a revolver and a T.M.C. respectively in their clothes. When the party reached the place where dacoits were camping, one of the dacoits started searching the members of the party of the villagers. When the sentry of the dacoit gang approached Shri Raja Singh for a search, the latter whipped out his revolver and fired at the dacoits. But the shot misfired. Shri Nathu Singh also tried to fire from the T.M.C. but he was not successful due to some mechanical fault in the weapon. Without losing their nerves these police officials reloaded their weapons and fired at the dacoits. They killed one of the dacoits, recovered a rifle and saved the kidnapped person.

Shri Raja Singh Tomar and Shri Nathu Singh displayed devotion to duty and gallantry of a high order in attacking

a gang of 6 dacoits in their haunt.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 7th December, 1971.

No. 61-Pres./73.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Tamil Nadu Police :—

Names and ranks of the officers

Shri Krishna Goundar Gopalakrishnan,
Sub-Inspector of Police,
Salem District,
Tamil Nadu.

Shri Marimuthu Ranganathan,
Head Constable No. 2094,
Salem District,
Tamil Nadu.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

While being incharge of Macdonald Choultry Police Station in Salem District, Shri Krishna Goundar Gopalakrishnan received information on 2nd July, 1972, that two habitual offenders who were wanted in a criminal case, had taken shelter in the hut of one Chinnammal. On receiving this information, Shri Gopalakrishnan rushed to the hide-out of the criminals alongwith Shri Marimuthu Ranganathan and three private individuals. The police party reached the hut at about 9 p.m. On seeing the police party, two criminals came out of the hut with knives in their hands. One of the criminals attacked Shri Ranganathan with his knife and inflicted a deep cut on his right hand. The criminal then attacked Shri Gopalakrishnan but he warded off the attack. Then the second criminal attacked Shri Gopalakrishnan, who took out his revolver and warned the criminals to drop their weapons. But the criminals continued to advance and threatened to kill both Shri Gopalakrishnan and Shri Ranganathan and other members of his party. Shri Gopalakrishnan then fired a shot from his revolver, as a result of which one of the criminals fell down on the ground. The second criminal then dropped his knife and surrendered to the police. Even though Shri Ranganathan was injured, and his finger was bleeding profusely, he assisted Shri Gopalakrishnan in bringing the dangerous criminal under control. The injured criminal subsequently succumbed to his injuries.

In apprehending two dangerous criminals, Shri Krishna Goundar Gopalakrishnan and Shri Marimuthu Ranganathan exhibited conspicuous courage and devotion to duty.

2. These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 2nd July, 1972.

A. MITRA, Secy.

PRIME MINISTER'S SECRETARIAT

New Delhi-110011, the 22nd September 1973

No. F.21/1411/71-PM.A.—In pursuance of sub-rule (1) of rule 5 of the Central Civil Services (Temporary Service) Rules, 1965, I hereby give notice to Shri Sultan Singh, Peon, that his services shall stand terminated with effect from the date of expiry of a period of one month from the date on which this notice is published in the Official Gazette.

S. P. KHANNA, Private Secy.
to the Prime Minister.

CABINET SECRETARIAT

Department of Personnel and Administrative Reforms

New Delhi, the 20th September 1973

No. 5/21/73-CS(I).—In the Cabinet Secretariat (Department of Personnel and Administrative Reforms) Notification No. 5/21/73-CS(I) dated the 23rd June, 1973, published in the Gazette of India Part I, Section 1 of that date, the following corrections shall be made namely :—

- (i) In page 623, Col. 2, in line 3, sub-para (2) of para 4, for the words "1st July, 1929", the words "1st January, 1929" shall be substituted.
- (ii) In page 624, Col. 2, in the 2nd Sub-para of Rule 10, in line 8, the word "Grade" shall be inserted between the words "Section Officers" and "irrespective".

M. K. VASUDEVAN, Under Secy.

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING

(Department of Family Planning)

New Delhi, the 20th September 1973

F. No. 5-9/71-AP.—In this Ministry's Notification No. 5-9/71-AP dated 29th January, 1973, relating to the constitution of an Indian Advisory Board to advise on policy and technical matters related to the Child Care Project in Andhra Pradesh,

For

Dr. Radha Raman,
Chairman,
Indian Council of Child Welfare,
Hyderabad.

Read

Chairman,
Indian Council of Child Welfare,
New Delhi.

A. P. ATRI, Dy. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 22nd September 1973

RESOLUTION

No. 24-1/73-CAI.—The Government of India have decided to reconstitute with immediate effect the Indian Coconut Development Council set up vide their Resolution No. 2-65/66-C.G.I dated the 15th December, 1969. The reconstituted Council will be composed as follows :—

I. CHAIRMAN—A non-official to be nominated by the Government of India.

II. VICE-CHAIRMAN—Additional Secretary to the Government of India in the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture)

III. MEMBERS—REPRESENTATIVE OF THE CENTRAL AND STATE GOVERNMENTS.

(A) STATES—One representative from each of the following State Governments in the Department of Agriculture to be nominated by the respective State Government :—

- (i) Kerala
- (ii) Tamil Nadu
- (iii) Mysore
- (iv) Andhra Pradesh
- (v) Orissa
- (vi) Goa
- (vii) Maharashtra

(B) CENTRAL GOVERNMENT

- (i) One representative of Planning Commission.
- (ii) One representative of Ministry of Commerce.
- (iii) Agricultural Commissioner with the Government of India.
- (iv) Project Coordinator (Coconut and Arecanut) and Director, Central Plantation Crops Research Institute, Post Kudlu, Kasargod, Kerala.
- (v) Joint Commissioner (Extension Training) or alternatively, Director, Farm Information Unit, as representative of the Directorate of Extension.

(C) GROWERS REPRESENTATIVES—Ten growers' representatives to be nominated by the respective State Governments from the major Coconut growing States as following :—

- (i) Kerala—Three representatives.
- (ii) Tamil Nadu—Two representatives.
- (iii) Mysore—One representative.
- (iv) Andhra Pradesh—One representative.
- (v) Maharashtra—One representative.
- (vi) West Bengal—One representative.
- (vii) Orissa—One representative.

One representative of growers nominated by Government of India.

(D) REPRESENTATIVE OF TRADERS—Three representatives of traders to be nominated on the Council out of the candidate recommended by various recognised Chambers of Commerce and other Trade Bodies.

(E) REPRESENTATIVES OF INDUSTRY—Three representatives of Industry.

(F) OTHERS—Three Members of Parliament to be nominated by the Department of Parliamentary Affairs.

(G) Such additional persons as may, from time to time, be nominated by the Government of India, to represent interest(s) not already represented on the Council.

IV. MEMBER SECRETARY—The Director, Directorate of Coconut Development, Ministry of Agriculture (Department of Agriculture) Ernakulam.

V. OBSERVERS—(Who would not be Members of the Council but would be invariably invited to assist the Council in its deliberations).

1. Chairman, State Trading Corporation or his representative.
2. Agricultural Marketing Adviser—Ministry of Agriculture (Deptt. of Agriculture)
3. Joint Secretary (Finance) accredited to the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture)
4. Economic & Statistical Adviser—Ministry of Agriculture (Department of Agriculture)
5. Director, Central Food Technological Research Institute, Mysore.
6. Secretary, National Cooperative Development Corporation.
7. Director (Horticulture)—Ministry of Agriculture (Department of Agriculture)
8. Joint Commissioner (Export Promotion) Ministry of Agriculture—Department of Agriculture.
9. Joint Commissioner (CC), Department of Agriculture.
10. Deputy Secretary (Crops), Department of Agriculture.

FUNCTIONS—2. The Council will be an advisory body and will have the following functions :—

- (i) To consider the development programme formulated by the Central and State Governments, review their progress from time to time and recommend measures for accelerating the progress;
- (ii) to play a dynamic role in examining the problems of marketing, processing, storage and transport of the commodities and in their trade and pricing and advising the Government thereon;
- (iii) to bring suitable co-ordination between research and development programmes by formulation of the programmes and in advising research agencies about the quality needs of the market in the commodity;
- (iv) to consider the needs of the export market and adjust the programmes of development suitably thereto; and
- (v) to perform such other functions designed to assist in the development of commodity, as may be assigned from time to time.

3. The Indian Coconut Development Council will have powers to set up, as necessary. Standing Committee, Technical

Committee and *Ad-hoc* Committee to look into issues of special importance and to Co-opt members, where necessary, (such as representatives of Agricultural Universities and other special interests.)

4. The Council will meet periodically at important centres of trade and industry, in areas in which coconut is grown and will make recommendations to the Government of India.

5. The term of the members of the Council will be for three years. Members of Parliament will cease to be the members of the Council as soon as they cease to be Members of Parliament or after 3 years whichever is earlier. The term may be extended or curtailed by the Government of India if considered necessary.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, Administrations of Union Territories and Ministries of the Government of India; Planning Commission, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Lok Sabha and Rajya Sabha Secretariat.

2. ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. C. KAPOOR, Addl. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE (DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE)

New Delhi, the 21st September 1973

No. 20-14/67-WW.—The Government of India had constituted a Committee on the Status of Women in India *vide* Resolution No. 20-14/67-S.W.2, dated 22nd September, 1971.

2. The Committee was to submit its report within a period of two years. The Committee represented that in view of the complexity and magnitude of the task assigned to it, it would not be able to complete it in two years.

3. After carefully considering all aspects of the matter, the Government have decided to extend the tenure of the Committee on the Status of Women in India from 22-9-73 to 31-3-74 to enable it to complete its report according to the terms laid down in the above-mentioned Resolution.

4. The composition of the Committee will be as follows with effect from 22-9-73 :—

Chairman

1. Smt. Phulrenu Guha.

Members

2. Smt. Neera Dogra.
3. Smt. Leela Dube.
4. Smt. Urmila Haksar.
5. Smt. Sakina A. Hasan.
6. Smt. Maniben Kara.
7. Shri Vikram Chand Mahajan, M.P.
8. Smt. K. Lakshmi Raghu Ramiiah.
9. Smt. Lotika Sarkar.
10. Smt. Savitri Shyam, M.P.

Member-Secretary

11. Dr. (Smt.) Vina Mazumdar.

ORDER

ORDERED that a copy of the above Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P. P. TRIVEDI, Jt. Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS (Railway Board)

New Delhi, the 21st September 1973

No. 72/RE/161/23.—It is hereby notified for the general information of all users of Railway lines and Premises that the A.C. Overhead traction wires will be energised on 25 Kv on or after 27th September, 1973, in the section Makarpura (Km. 386/428) to Bhostan (Km. 257/49) of Baroda & Bombay

Divisions and from the same date, the overhead traction line shall be treated as live at all times and no unauthorised persons shall approach or work in the proximity of it.

New Delhi, the 11th September 1973

No. 72/RE/161/23.—It is notified for information of General Public that in connection with the introduction of 25 Kv A.C. Electric Traction, over the section Makarpura (Km. 386/428)—Bhostan (Km. 257/49) of the Western Railway, Height Gauges have been erected at all the level crossings with a clear height of 4.673 metres (15'—4") above the road level with a view to prevent loads of excessive height from coming into contact for dangerous proximity to live traction wires. Public are hereby notified to observe the height specified above for the purpose of loading vehicles and to see that the loads carried in road vehicles do not infringe the height gauges under any circumstances.

The dangers of a load of excessive height are as follows :—

1. Danger to the height gauge & consequent obstruction to the Road as well as the Railway line.
2. Danger to the materials or equipment carried or the vehicle itself.
3. Danger of fire and risk of life due to the contact or dangerous proximity to the live conductors.

H. F. PINTO, Secy, Rly. Board

New Delhi the 12th September 1973

RESOLUTION

No. ERBI/73/21/81.—In fulfilment of the assurance given by the Deputy Minister for Railways on 11-12-1972 while replying to a Question in the Rajya Sabha, the Government of India have constituted a Committee known as the 'Committee

on the functioning of Sholapur Division of South Central Railway".

The Committee will consist of the followings :—

Chairman

1. Shri Mohd. Shafi Qureshi,
Dy. Minister for Railways.

Members

2. Shri S. R. Damani, M.P.,
Lok Sabha.
3. Shri Baburao J. Kale,
M.P., Lok Sabha.
4. Shri N. G. Goray, M.P.,
Rajya Sabha.

The Director Efficiency Bureau, Railway Board will act as the Secretary of the Committee.

The terms of reference of the Committee are :

- (i) to identify and examine the rail transport problems actually encountered by the Trade on Sholapur Division and recommend practical ways and means for their solution by the South Central Railways; and
- (ii) to ascertain and advise the South Central Railways on administratively viable and generally satisfactory means for solving any special or extra-ordinary difficulties experienced by the staff of the Sholapur Division.

The Committee will endeavour to submit its report to Government as early as possible.

H. F. PINTO, Secy., Rly. Board
& ex-officio Jt. Secy.